सामाजिक विकास की कहानियों का लेखन

व्यावहारिक प्रवेशिका - 3

सामाजिक नागरिक कार्यकर्ता समाज के विषयों और बदलाव की कहानियाँ कैसे लिखे?

रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद

शीर्षक **सामाजिक विकास की कहानियों का लेखन**
स्वरुप प्रवेशिका
संयोजन सचिन कुमार जैन
परामर्श गुरुशरण सचदेव, संदीप नाइक, विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, राकेश मालवीय, रंजीत अभिज्ञान, पूजा सिंह, राजेश भदौरिया और रीता भाटिया
वर्ष फ़रवरी, 2023
प्रकाशन रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद
पता ए-5, आयकर कालोनी, जी-3, गुलमोहर, भोपाल-462039. मध्यप्रदेश. भारत
संस्करण प्रथम
संपर्क office@vssmp.org / 0755 4252789

विकास लेखन और संचार

महत्वपूर्ण सूत्र, चरण, प्रक्रिया और स्वरुप

सामाजिक कार्यकर्ता और विकास पत्रकार के रूप में समाज की स्थिति और उनकी कहानियों को सार्वजनिक पटल पर लाने के लिए अब अलग-अलग तरह के विकल्प उपलब्ध हैं. जनसंचार माध्यमों में अखबार, पत्रिकाएं, टेलिविज़न चैनल, रेडियो आदि तो पहले से उपलब्ध रहे ही हैं. इनके साथ ही अब सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से कई स्वतंत्र विकल्प भी उपलब्ध हैं.

हम ऐसी स्थिति में पहुँच गए हैं, जब संवाद और सम्प्रेषण (यानी बात का कहा-सुना जाना) माध्यमों का विशेष अधिकार नहीं रह गया है. अतः अब हमें अपनी तैयारी का आंकलन करना है और देखना है कि हमने क्या खुद क्या पहल की?

अब समाज, समाज की समस्यायों और सामाजिक बदलाव के कहानी लिखने, फिल्म बनाने या उन्हें प्रसारित करने के लिए किसी बाहरी कौशल की जरूरत नहीं है. एक सामजिक नाग्तिक कार्यकर्ता के रूप में हम स्वयं यह काम कर सकते हैं.

जब हम विकास के मुद्दों पर लेखन और संवाद की बात करते हैं, तब हमें एक प्रक्रिया का पालन करना जरूरी होता है. निश्चित रूप से विकास लेखन/विकास संचार के कुछ व्यावहारिक सिद्धांत और मूल्य होते हैं. इनको हमेशा ध्यान में रखना जरूरी होता है. इस प्रवेशिका में हम विकास लेखन के बुनियादी आयामों को जानने की कोशिश करेंगे.

महत्वपूर्ण सूत्र

विकास संचार/विकास लेखन के उद्देश्य

- विकास संबधी लेखन/संचार का उद्देश्य होता है समाज को बेहतर बनाना. जो लोग उपेक्षित और वंचित हैं, उनकी बात को ऐसे मंचों और समूहों तक लेकर जाना, जो स्थिति को बदलने की पहल करने के लिए जिम्मेदार हैं.
- इसके साथ ही समाज के सकारात्मक पहलुओं को पहचान कर उन्हें प्रोत्साहित करना.
- समाज की विसंगतियों और कुरीतियों को दूर करने के लिए वातावरण तैयार करना.
- विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूरे करने के लिए चलाई गई योजनाओं और नवाचारों का विश्लेषण करना और प्रभावी कार्यक्रमों के फैलाव को प्रोत्साहित करना.
- विकास संचार का उद्देश्य समावेशी विकास के दृष्टिकोण से समाज और अन्य सभी संस्थाओं (जिनमें सरकार, निजी क्षेत्र, सामाजिक नागरिक संस्थाएं और राजनीतिक समूह भी शामिल हैं) को जिम्मेदारी और संवेदनशीलता के साथ सूचित करना, शिक्षित करना और प्रेरित करना होता है.

प्रमुख तत्व

- **पक्षधरता -** विकास संबधी लेखन में "निष्पक्षता" नहीं होती है. यह काम करते समय न्याय, समता, गरिमा, सद्भाव, नागरिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता सरीखे मूल्यों का पक्ष लिया जाता है. हम उन लोगों और समुदायों के "पक्ष" में होते हैं, जिनके जीवन को गरीबी, शोषण, उपेक्षा और असमानता से चक्र से बाहर निकाले जाने का लक्ष्य समाज, संस्थाओं और सरकार ने निर्धारित किया है.
- **सबसे महत्वपूर्ण है समाज -** विकास संचार की अवधारणा के केंद्र में "समाज या लोग" ही होते हैं. उन्हें ही सबसे अधिक महत्व दिया जाना चाहिए. आखिर वंचितपन से प्रभावित कौन होता है? लोग! समस्याओं से कौन जूझता है? - लोग! स्थितियां बदलेंगी, यह उम्मीद कौन साधे रखता है? लोग! जब बदलाव की प्रक्रिया शुरू होती है, तब सबसे ज्यादा सहभागी भूमिका भी लोग ही निभाते हैं. अतः किसी और इकाई को समाज या लोगों से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं मानना चाहिए.
- **पूर्वाग्रह से मुक्ति** - हम अकसर व्यक्तियों या समुदायों के प्रति कोई न कोई धारणा या पूर्वाग्रह पाल कर रखते हैं. जब विकास संचार या विकास सम्बन्धी लेखन की बात आती है, तो हमें व्यक्तियों, समुदायों, समस्यायों के बारे में सटीक, तथ्यात्मक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जानकारी हासिल करना होती है. यह पूर्वाग्रह लेकर कि यह समुदाय कट्टर विचारधारा का है, यह समुदाय हिंसक है, यह पद्धति गलत है, यह समुदाय तो अपराध में ही लिप्त रहता है, वंचित समुदायों के लोग आलसी होते हैं; ऐसी धारणाएं और पूर्वाग्रह रखकर विकास सम्बन्धी लेखन और संचार नहीं किया जा सकता है.

- **जिम्मेदारी और जवाबदेहिता -** कोई भी सन्देश/कहानी/चित्र प्रसारित करने से पहले यह जांच-परख लेना चाहिए कि जो भी सन्देश प्रसारित किया जा रहा है, कहीं उससे किसी की गरिमा को ठेस तो नहीं पहुंचेगी? कहीं समाज में विद्वेष की भावना का फैलाव तो नहीं होगा? कहीं वैमनस्यता तो नहीं पनपेगी? कहीं राष्ट्र की सुरक्षा, एकता, बंधुता पर नकारात्मक प्रभाव तो नहीं पड़ेगा? यह लेखन करने और सन्देश प्रसारित करने वाले व्यक्ति और समूह की जिम्मेदारी होती है कि वह पूरी संवेदनशीलता के साथ इन प्रश्नों के उत्तर दे.

- **जिज्ञासा और आत्म-संवाद -** विकास की कहानी समाज, राज्य व्यवस्था और संस्थाओं को अपनी पहल/भूमिकाओं को बेहतर करने में मदद करती है. अतः यह जरूरी हो जाता है कि विकास लेखन करने वाले व्यक्तियों ने सामाजिक-आर्थिक विषयों को जानने की जिज्ञासा हो. यह प्रश्न स्वयं से पूछा जाए कि वास्तव में समाज के मुद्दे और समस्याएं क्या हैं? उन्हें कैसे हल किया जा सकता है? उनके कारण क्या हैं? इसके लिए अनुभवी कार्यकर्ताओं, संस्थाओं और विशेषज्ञों से बातचीत की जाती रहे.

- **अध्ययन -** अगर हम विकास के विषयों के अलग अलग पहलुओं के बारे में स्पष्ट जानकारी और समझ नहीं रखते हैं, तो हमारी कहानियाँ अधूरी और निष्प्रभावी रहेंगी. विषयों के बारे में पढ़ते-अध्ययन करते रहना बहुत जरूरी होता है.

- **सहमति** - जिनकी कहानी लिखी/प्रसारित की जा रही है, उनकी गरिमा, स्वतंत्रता और विचारों का पूरा सम्मान किया जाना चाहिए. कहानी में बच्चों, महिलाओं, परिवार और समुदाय की बात, उनकी स्थिति प्रस्तुत करने और उनके चित्र या वक्तव्य का उपयोग करने की सहमति ली जाना चाहिए.

- **सन्दर्भ और स्रोत -** हमारी जानकारी के स्रोत क्या और कौन हैं? अगर जानकारी स्रोत विवेकशील, तथ्य आधारित और विश्वसनीय होंगे, तो विकास की खबर/कहानी/सन्देश भी परिपक्व और विश्वसनीय होंगे. अपने सन्दर्भ और स्रोतों के प्रति बेहद सचेत रहना चाहिए.

- **संपादन -** हमने जो कहानी लिखी है, उसे एक पाठक के रूप में खुद पढ़ें. स्वयं से यह प्रश्न पूछें कि क्या विषय स्पष्ट है? क्या प्रस्तुति तथ्यात्मक है? क्या सन्देश स्पष्ट है? क्या शब्दों का चयन सही है? कहीं कोई उलझाव तो नहीं है? कहीं कोई दोहराव तो नहीं है? अपनी कहानी को स्वयं दुरुस्त करना बेहतर होता है. इसके बाद अपने साथियों को कहानी पढवाएं और उनकी प्रतिक्रिया लेकर सुधार करने के लिए तैयार रहें.

लेखन और लेखक के लिए

बुनियादी मूल्य और सिद्धांत

गरिमा

- हर व्यक्ति, चाहे वह बच्चे हों, किसी भी लिंग का व्यक्ति हो, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, किसी भी सम्प्रदाय और पेशे का व्यक्ति हो, हर परिस्थिति में उसकी गरिमा और उसके अधिकारों का ख्याल रखा जाना चाहिए.

- यह जांचें कि कहीं सूचना-समाचार-प्रसारण से किसी व्यक्ति, समुदाय, संस्कृति, जीवन शैली, लिंग, धर्म या पेशे को कलंकित या लांछित तो नहीं किया जा रहा है? इसके लिए समाचार और चित्रों की प्रस्तुति में शब्दों और भावों की पड़ताल की जाना चाहिए.

- व्यक्ति या समुदाय को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ऐसी बात कहने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए, जो उनकी स्वाभाविक सोच से जुड़ी हुई न हो. इतना ही नहीं उनकी बातों को सन्दर्भ और पृष्ठभूमि से हटाकर प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए.

- जिन विषयों से व्यक्ति या समुदाय की गरिमा और सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न होता हो, उनकी प्रस्तुति में व्यक्ति या समुदाय की पहचान को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में उजागर न किया जाए. साथ ही उनके साक्षात्कार और दस्तावेजों की सार्वजनिक प्रस्तुति (जैसे पुलिस की प्रथम सूचना रिपोर्ट को ज्यों का त्यों प्रकाशित कर देना) में सजगता से यह जांचा जाए कि कहीं इनमें पहचान से जुड़ी बातें तो शामिल नहीं हैं.

निजता

- जब भी किसी भी समुदाय, व्यवसाय, धार्मिक विश्वास से सम्बंधित व्यक्ति से साक्षात्कार लिया जा रहा हो, तब उसकी निजता और गोपनीयता का सम्मान हो. उनकी बातों को पूरी तरह से बिना पूर्वाग्रह के सुना जाए और उसमें अपनी धारणाओं को शामिल न किया जाए. उसके हितों, अधिकार और सुरक्षा को प्रभावित करने वाले निर्णयों की प्रक्रिया में उनकी सहभागिता की वकालत की जाए.

संरक्षण

- पत्रकार के रूप में यह ध्यान रखना चाहिए कि सूचना-समाचार की प्रस्तुति ऐसी हो कि उस व्यक्ति या समुदाय के हितों और संवैधानिक अधिकारों का संरक्षण हो.

- महिलाओं, बच्चों, किसी भी लिंग के का व्यक्ति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, किसी भी सम्प्रदाय और पेशे के व्यक्ति से कहाँ, कब और कैसे बातचीत की जाना है, इस पहलू पर गंभीर विचार और तैयारी होना चाहिए. व्यक्ति और समुदाय की सहजता को ध्यान में रखते हुए स्थान और समय का निर्धारण होना चाहिए.

पहचान

- किसी भी व्यक्ति, समुदाय, संस्कृति, जीवन शैली, लिंग, धर्म या पेशे से सम्बंधित ऐसी टिप्पणियों, शब्दों, चित्रों और प्रस्तुति से परहेज़ करना चाहिए, जो आलोचनात्मक या पक्षपाती हों या उनकी तकलीफों को बढ़ाते हों.

- जब भी निम्न विषयों पर समाचार/लेख/विश्लेषण प्रस्तुत किये जा रहे हैं, तब व्यक्ति/बच्चों/महिला की पहचान को सार्वजनिक न करें -

    - ✓ यौन शोषण के शिकार
    - ✓ अगरिमामय व्यवहार के शिकार
    - ✓ देह व्यापार में संलग्नता
    - ✓ एचआईवी से प्रभावित
    - ✓ किसी व्यक्ति के द्वारा किये गए अपराध के सम्बन्ध में उसके परिवार की पहचान को सार्वजनिक करना या उसे लांछित करना
    - ✓ किसी अपराध की सज़ा पूरी कर चुके व्यक्ति को पहचान को अकारण प्रस्तुत करना

स्वतंत्रता

- कोई भी धर्म अंधविश्वास को सिद्धांत नहीं मानता है. पत्रकारीय कर्म में धर्म और सम्प्रदायों से सम्बंधित पहलुओं पर लेखन करते समय यह जांच लेना चाहिए कि कहीं यह मेरा अपना निजी विश्वास तो नहीं है? कहीं यह अंधविश्वास तो नहीं है? कहीं यह धर्म के मूलभूत सिद्धांतों के विपरीत बात तो नहीं है. भारत के संविधान के अनुच्छेद 25 के अनुसार हर व्यक्ति को लोकव्यवस्था, सधाचार और स्वास्थ्य के मानकों के अधीन रहते हुए धर्म को मानने, आचरण करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता है. इसका आशय यह है कि इसमें छुआछूत, भेदभाव, साम्प्रदायिक हिंसा, भय और संसाधनों के दुरूपयोग के तत्व “धार्मिक स्वतंत्रता” में शामिल नहीं हैं.

जवाबदेयता

- यह एक पत्रकारीय मूल्य है, जिसका सीधा सम्बन्ध संवैधानिक मूल्यों और व्यक्ति के मूलभूत अधिकारों से भी है कि जब भी व्यक्ति या समुदाय से लिए गए सभी साक्षात्कारों, छाया चित्रों और दृश्य-श्रव्य सामग्री, उनसे प्राप्त दस्तावेजों के उपयोग के लिए उनसे स्पष्ट सहमति और अनुमति लें. कई बार ऐसा हो सकता है कि व्यक्ति या समुदाय अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए विवरण तो प्रदान करता

है, लेकिन उसकी सार्वजनिक प्रस्तुति न चाहता हो. इससे उसकी गरिमा, स्वतंत्रता और सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है.

भेदभाव

- कोई भी समाचार या विश्लेषण या चित्र इकट्ठा करने की प्रक्रिया और प्रस्तुति में व्यक्ति के लिंग, जाति, आयु, धर्म, स्थिति, शैक्षिक पृष्ठभूमि या शारीरिक क्षमताओं या सामुदायिक पहचान के आधार तथ्यों को प्रस्तुत करने में भेदभाव न करें.

- किसी घटना, अपराध, हिंसा, साम्प्रदायिक टकराव से सम्बंधित समाचार, पड़ताल या विश्लेषण की प्रस्तुति में ऐसा चित्रण न हो, जो समाज में अपराधों, हिंसा, भेदभाव, वैमनस्यता या आत्मघात की पृवत्ति को प्रोत्साहित करता हो. एक अपराधी भी, अपराध करने के बाद पश्चाताप की स्थिति में हो सकता है, उसे अपने आप को बेहतर व्यक्ति बनने का अवसर दिया जाना चाहिए. सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार, लेखक और विश्लेषकों से ऐसी घटनाओं और परिस्थितियों का साझेदार/प्रेरक/प्रशिक्षक बनने की अपेक्षा नहीं की जाती है.

विकास लेखन के चरण और प्रक्रिया

विषय क्या है?

(यह आवश्यक है कि जब हम विकास के विषय पर लेखन, वीडिओ फिल्म या फोटो आधारित संवाद करना चाहते हैं, तब हमारे पास एक स्पष्ट विषय हो. अपने विषय को 2-3 वाक्यों में लिख लें. यह स्पष्ट होना चाहिए कि विषय प्रामाणिक हो और उसकी प्रामाणिकता की जांच की जा सके. विषय का मतलब क्या है? हम देख सकते हैं कि समुदाय/लोगों की कोई समस्या थी, जिसके निराकरण की पहल की गई है और कोई शुरूआती बदलाव दिखाई देने लगा है? एक महिला है, जिसने समस्या के निराकरण के लिए स्वयं कोई पहल की और समाधान हासिल कर लिया. कोई समस्या है, जिससे लोग/समुदाय प्रभावित हो रहे हैं? किसी कार्यक्रम या योजना के परिणाम स्वरुप किसी समुदाय की स्थिति में बदलाव आ रहा है? पर्यावरण, जलसंकट, स्वास्थ्य की समस्याएं भी विषय हो सकते हैं. जो विषय चुना गया है, उसका स्थान क्या है - गाँव, जिला, राज्य, देश आदि? जो विषय चुना गया है, वह किस समुदाय से सम्बंधित है - ग्रामीण, शहरी, अनुसूचित जाति समुदाय/लोग, अनुसूचित जनजाति समुदाय/लोग, बच्चे, महिलायें, अल्पसंख्यक, पारलिंगी/अन्य लैंगिक समुदाय आदि?)

.....

.....

.....

.....

.....

विषय के निर्धारण के आधार क्या हैं?

(लेखक या पत्रकार खुद विषय निर्मित नहीं करता है. वह एक पहले से मौजूद विषय की पहचान करता है, विषय की खोज करता है और उससे सम्बंधित जानकारियों को जुटाकर प्रभावी रूप से दूसरों को विषय से अवगत करवाता है. जब एक विषय की पहचान कर ली जाती है, तब यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह समस्या किसकी है? समस्या कौन कह/बता रहा है? अगर विषय स्थिति में बदलाव से सम्बंधित है, तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि बदलाव का विवरण कौन उपलब्ध करवा रहा है? यह विवरण समुदाय के सदस्य, महिला समूह, बच्चे, शिक्षक, सरपंच, स्वैच्छिक संस्था के प्रतिनिधि उपलब्ध करवा सकते हैं.)

.....

.....

.....

.....

मुख्य पात्र कौन हैं?

(जब विकास से संबधित विषय की कहानी कही या प्रसारित की जाती है, तब शुरुआत में ही यह स्पष्ट कर लेना चाहिए कि उस विषय/समस्या/बदलाव से सबसे ज्यादा प्रभावित कौन रहा/हुआ है? किन्होनें सबसे अहम् भूमिका निभाई? प्रभावित लोगों के द्वारा ही, उनकी भाषा में ही विषय को प्रस्तुत किया जाना चाहिए. इसके साथ ही जब स्थिति में बदलाव की कहानी कही जायेगी, तब यह उल्लेख किया जाएगा कि वह बदलाव किसके कारण आया? किसने योजना बनाई? किसने पहल की? किसने प्रोत्साहन प्रदान किया? किसने संसाधन प्रदान किये? आदि. यही विकास की कहानी के पात्र माने जाते हैं.)

.....

.....

.....

.....

.....

सबसे महत्वपूर्ण-उल्लेखनीय बात/बिंदु क्या है?

(जो विषय चुना गया है, उस विषय में हम बताना क्या चाहते हैं? सोचिये कि जो भी व्यक्ति उस कहानी को पढ़ेगा/देखेगा, उसे क्या कोई नई बात पता चलेगी? क्या कोई बदलाव आया है? क्या कोई समस्या बताना चाहते हैं? क्या कोई नवाचार/नया प्रयोग किया गया है?)

.....

.....

.....

बदलाव कैसे आया?

(जब विषय/स्थिति का विवरण दिया जाएगा, तब उसमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि स्थितियों में जो बदलाव आया, वह कैसे और किनकी पहल के कारण आया. यह बदलाव किसी महिला के कारण आ सकता है, पंचायत के अच्छे काम के कारण आ सकता है, किसी शिक्षक या आशा कार्यकर्ता की पहल से आ सकता है. किसी सामूहिक पहल से आ सकता है. सरकार की योजना के कारण आ सकता है. किसी संस्था की पहल के कारण भी आ सकता है. जब इस प्रश्न का जवाब दिया जाएगा, तब बदलाव के कारण/माध्यम की जानकारी तथ्यों के साथ ही दर्ज की जाना चाहिए.)

.....

.....

.....

तथ्य क्या हैं?

(जिस विषय पर लेखन/संचार किया जा रहा है, उसमें जो बदलाव आया है, क्या उससे सम्बंधित तथ्य और आंकड़े उपलब्ध हैं? पहले की स्थिति क्या थी और अबकी स्थिति क्या है? दोनों स्थितियों में क्या अंतर आया? जो तथ्य दिए जा रहे हैं, उनके स्रोत क्या

हैं? जानकारी/तथ्यों के स्रोत विश्वसनीय होना चाहिए. तथ्य और जानकारियाँ ऐसी होना चाहिए, जिनका पुनर्परीक्षण किया जा सके, जिन्हें जांचा जा सके.)

.....

.....

.....

चित्रण के साथ विवरण

(सभी बातें हमें तथ्यों या वक्तव्यों से नहीं मिलती हैं. विकास की कहानी पाठक/दर्शक के मन से तभी जुड़ती है, जब उसमें स्थान, परिस्थिति, समस्या का ऐसा चित्रण हो, जिसे महसूस किया जा सके. जब हम स्वच्छता के विषय पर बात करेंगे या कृषि की समस्या पर, हमें जमीनी दृश्य का विवरण देना चाहिए. पानी की समस्या के निराकरण से सम्बंधित खबर में यह उल्लेख किया जा सकता है कि पहले महिलाओं को ऊबड़-खाबड़ रास्ते से पहाड़ी से उतरकर पानी भरने के लिए जाना पड़ता था और उस रास्ते का कुछ हिस्सा जंगल से होकर भी गुज़रता था; लेकिन अब स्थिति बदल गई है. परिस्थिति का यह चित्रण कहानी/खबर के बीच-बीच में दर्ज होता रहता है.)

.....

.....

.....

.....

.....

नीति/क़ानून/योजना से संबधित पक्ष

(विकास लेखन के लिए जिस विषय को चुना गया है, उससे सम्बंधित नीतियां, योजनायें और क़ानून कौन से हैं? किन नीतियों की आवश्यकता महसूस की जा रही है?

नीतियों/क़ानून/योजनाओं के क्रियान्वयन से जुड़े अनुभव क्या रहे हैं? इनका उल्लेख तथ्यात्मक ढंग से करना चाहिए.)

.....

.....

.....

.....

.....

प्रभावित व्यक्तियों/समूह/समुदाय का पक्ष

(विकास लेखन में हमेशा कोई न कोई समुदाय/समूह या व्यक्ति केंद्र में होंगे ही. यह सुनिश्चित करना कि कहानी के निष्कर्ष उनकी बातों/वक्तव्यों से ही निकल कर आयें. यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिस समूह/समुदाय से संबधित कहानी प्रस्तुत की जा रही है, उनके वक्तव्य/उनकी बातें मूल सन्दर्भ के साथ सटीक तरीके से प्रस्तुत की जाएँ.)

.....

.....

.....

.....

.....

व्यक्ति/समुदाय की पहचान

(विकास संचार की पहल करते समय कई बार ऐसी घटनाओं/परिस्थितियों की कहानी कही जाती है, जिनमें व्यक्ति या समुदाय का गरिमा पर आघात हुआ हो. ऐसी स्थिति में यह

ध्यान रखा जाना चाहिए कि व्यक्ति या समुदाय की गरिमा पर आघार न हो और जरूरत पड़ने पर उनकी पहचान का उल्लेख न किया जाए.)

.....

.....

.....

.....

.....

विकास की कहानी/समाचार का स्वरुप

शीर्षक

उप-शीर्षक

कहानी/समाचार का परिचय (100-150 शब्दों में)

- क्या, कहाँ, कब, कौन और क्यों के उत्तर देना.
- संक्षेप में उत्तर देना.
- प्रभावी और स्पष्ट अर्थ वाले शब्दों का उपयोग करना.
- विवरण का शीर्षक से जुडाव होना.
- जानकारी का तथ्यात्मक होना.

कहानी/समाचार में विवरण (400-800 शब्दों में)

- क्या, कहाँ, कब, कौन और क्यों के उत्तर को विस्तार देना.
- विवरण में “क्यों” और “कैसे” का विस्तार से उल्लेख करना.
- तथ्यों का उपयोग करना.
- जो विषय चुना गया है, वह विकास का विषय क्यों है?
- सम्बंधित/प्रभावित व्यक्तियों के वक्तव्य/विचार/पक्ष को जोड़ना.
- शीर्षक से स्पष्ट जुड़ाव होना.
- कोई निजी नजरिया या धारणा या पूर्वाग्रह शामिल न करना.

प्रभावी चित्र का उपयोग करना

- चित्र प्रत्यक्ष रूप से विकास सम्बन्धी कहानी से जुड़ा होना चाहिए.
- चित्र का शीर्षक दीजिये.
- आवश्यकता पड़ने पर चित्र का विवरण भी दर्ज कीजिये.

संक्षेप में परिणाम / निष्कर्ष (100-150 शब्दों में)

- विकास सम्बन्धी कहानी/समाचार के अंत में पूरी कहानी का संक्षेप में निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिये. इसमें समस्या, समस्या के निराकरण की पहल और वास्तविक बदलाव को एक साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जा सकता है.